राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020: संस्कृत भाषा पर ध्यान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया है, जिसका जोर एक भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान की स्थापना पर था, जबकि अन्य भारतीय भाषाओं के साथ-साथ संस्कृत भाषा पर भी जोर दिया गया था। एनपीई 2020 ने कहा कि भारतीय और क्षेत्रीय भाषाओं की ओर पर्याप्त ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए और नई नीति के अनुसार संस्कृत भाषा को शिक्षा प्रणाली में मुख्यधारा में शामिल किया जाएगा।

संस्कृत भाषा की मुख्य विशेषताएं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि स्कूली शिक्षा में मजबूत पेशकशों के साथ संस्कृत को "मुख्यधारा" के रूप में लागू किया जाएगा - जिसमें त्रि-भाषा फार्मूले में भाषा विकल्पों में से एक और स्कूलों की पेशकश करने वाले उच्च अध्ययन में भी शामिल है। एनईपी 2020 के अनुसार, यह प्रस्तावित किया गया है कि इस प्रणाली को इस तरह से स्थापित किया जाएगा कि यह भाषा अनुवाद और व्याख्या के प्रयासों में सहायता के लिए प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग को रोक सके।

- संस्कृत विश्वविद्यालय अपनी शिक्षा प्रणाली में अन्य प्रमुख विषयों सहित उच्च शिक्षा के बड़े बहु-विषयक संस्थान बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगे और इसी तरह संस्कृत भाषा सहित अन्य विश्वविद्यालय भी।
- स्कूल के सभी शिक्षा स्तरों और उच्च शिक्षा में भी संस्कृत एक महत्वपूर्ण विषय होगा।
- त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत भाषा को विकल्प के रूप में शामिल किया जाएगा।
- कुछ विदेशी भाषाओं जैसे कोरियाई, जापानी, थाई, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली और रूसी को भी माध्यमिक स्तर पर स्कूली शिक्षा में पेश किया जाएगा।

बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) में 'बहुभाषावाद, और भाषा की शक्ति' नामक एक खंड है। इस खंड में नीति ने कम से कम ग्रेड 5 तक, लेकिन अधिमानतः ग्रेड 8 और उससे आगे तक शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा पर जोर दिया है। छात्रों के लिए एक विकल्प के रूप में स्कूल और उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर संस्कृत की पेशकश की जाएगी, जिसमें त्रि-भाषा सूत्र भी शामिल है। भारत की अन्य शास्त्रीय भाषाएं और साहित्य भी विकल्प के रूप में उपलब्ध होंगे। किसी भी छात्र पर कोई भाषा थोपी नहीं जाएगी।

- छात्रों को 'भारत की भाषाएं' पर एक मनोरंजक परियोजना/गतिविधि में भाग लेने के लिए, कभी-कभी ग्रेड 6-8 में, जैसे कि 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' पहल के तहत।
- माध्यमिक स्तर पर कई विदेशी भाषाओं की भी पेशकश की जाएगी।
- भारतीय सांकेतिक भाषा (आईएसएल) को पूरे देश में मानकीकृत किया जाएगा, और श्रवण बाधित छात्रों द्वारा उपयोग के लिए राष्ट्रीय और राज्य पाठ्यक्रम सामग्री विकसित की जाएगी।
- एनईपी अनुशंसा करता है कि एक भारतीय अनुवाद और व्याख्या संस्थान (आईआईटीआई), पाली, फारसी और प्राकृत के लिए राष्ट्रीय संस्थान (या संस्थान), एचईआई में संस्कृत और सभी भाषा विभागों को मजबूत किया जाए, और शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा/स्थानीय भाषा का उपयोग किया जाए। अधिक एचईआई कार्यक्रमों में।

- भारतीय भाषाओं के शिक्षण और सीखने को शिक्षा के हर स्तर पर स्कूल और उच्च शिक्षा के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है।
- भाषाओं को प्रासंगिक और जीवंत बनाए रखने के लिए स्कूलों और कॉलेजों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की एक स्थिर धारा प्रदान करनी चाहिए, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की एक स्थिर धारा होनी चाहिए।
- दक्षता के साथ भाषा सीखने के लिए छात्रों को पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, वीडियो, नाटकों, कविताओं, उपन्यासों, पत्रिकाओं आदि जैसी अध्ययन सामग्री प्रदान की जानी चाहिए।
- नीति में यह भी शामिल है कि भाषा के विषयों को अक्सर उनकी शब्दावली और शब्दकोशों में अद्यतन किया जाना चाहिए, जो सबसे मौजूदा मुद्दों और अवधारणाओं के लिए व्यापक रूप से परिचालित किया जाता है।

तीन भाषा सूत्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने कक्षा 5 तक शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा या स्थानीय भाषा के उपयोग पर 'जोर' दिया है, जबकि इसे कक्षा 8 और उससे आगे तक जारी रखने की सिफारिश की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2019 का मसौदा, एक समिति की अध्यक्षता में तैयार किया गया है। वैज्ञानिक डॉ कस्तूरीरंगन ने त्रिभाषा सूत्र की सिफारिश की है।

- **प्रथम भाषा**: यह मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होगी।
- **दूसरी भाषा**: हिंदी भाषी राज्यों में यह अन्य आधुनिक भारतीय भाषाएं या अंग्रेजी होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में, यह हिंदी या अंग्रेजी होगी।
- **तीसरी भाषा**: हिंदी भाषी राज्यों में, यह अंग्रेजी या आधुनिक भारतीय भाषा होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्य में, यह अंग्रेजी या आधुनिक भारतीय भाषा होगी।

शिक्षा और उचित शिक्षा पर ध्यान वापस लाने के लिए शिक्षा प्रणाली के दिशा-निर्देशों और सुधार में विभिन्न परिवर्तनों के साथ शिक्षा नीति में सुधार किया गया है। नई शिक्षा नीति में इसरो के पूर्व प्रमुख के कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में विशेषज्ञ टीम द्वारा सुधार किया गया है, जिन्होंने शिक्षा मंत्रालय के साथ मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलने का प्रस्ताव भी सुझाया था, जिसे केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी दे दी थी। प्रेस कॉन्फ्रेंस। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर और शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने कैबिनेट को नई शिक्षा नीति 2020 के बारे में जानकारी दी।